वर्ष - 1, अंक - 2, जुलाई 2017
जे-7, श्रीराम नगर, रायपुर (छ.ग.)

आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक - CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला

सह-संपादक - एम. सुधीश

प्यारे दोस्तों,

किलोल का यह दूसरा अंक आपके हाथ में देते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। आपको यह बताते हुए और भी प्रसन्नता हो रही है, कि किलोल का पंजीकरण आर.एन.आई. में हो गया है। आप सबके सहयोग से हमने यह बाल पत्रिका प्रारंभ की है, और आपके सहयोग से ही यह आगे चल सकती है। यह पत्रिका मेरी वेबसाइट http://www.alokshukla.com पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है। सभी शिक्षक साथियों से अनुरोध है कि किलोल अपने मोबाइल अथवा कम्प्यूटर पर डाउनलोड करें, और जहां कहीं संभव हो स्मार्ट क्लास में बच्चों को पढ़ने के लिये दें। जहां स्मार्ट क्लास नहीं हैं वहां पर इसका प्रिंट निकालकर बच्चों को पढ़ने के लिये दिया जा सकता है। किलोल के अगले अंकों के लिये शिक्षकों, बच्चों और अन्य सभी लोगों की रचनाओं का मुझे इंतज़ार रहेगा। अपनी रचनाएं आप dr.alokshukla@gmail.com पर ई-मेल व्दारा भेज सकते हैं। सभी बच्चों को प्यार के साथ .....

आलोक शुक्ला

नटखट बंदर

लेखिका - पुष्पा शुक्ला

मीरा के घर के पास ही नीम का एक पेड़ था. बन्दर का एक छोटा सा बच्चा पेड़ की डाल पर इधर-उधर कूद रहा था. मीरा के कमरे की खिडकी बिलकुल पेड़ के पास ही थी. मीरा खिडकी खोलकर पढ़ रही थी. उसकी दादी ने केले लाकर दिए और कहा - "मीरा पहले केले खा लो फिर पढाई करना." मीरा ने कहा - "जी दादी." मीरा ने केला छीलना शुरू किया ही था कि बन्दर का बच्चा झट से आया और मीरा के हाथ से केला छीनकर भागा. अचानक मीरा को ज़ोर की छींक आ गई. मीरा जोर से छींकी – "आ.....छी."

बन्दर के बच्चे ने ऐसी आवाज कभी नहीं सुनी थी. वह डर गया. उसके हाथ से केला छूटकर गिर गया. वह वापस पेड़ पर जा बैठा. मीरा यह देखकर हँसने लगी - "हा.. हा... हा..." तभी दादी ने कहा - "मीरा, जब भी छींक आए हमें मुँह पर रुमाल रखकर छींकना चाहिए. इससे बीमारियों के फैलने से बचाव होता है." मीरा ने कहा - "अच्छा दादी, हमेशा मैं अब छींक आते ही मुंह पर रुमाल रखूंगी." दादी ने कहा - "तुम अच्छी लड़की हो." फिर मीरा ने कहा – "दादी, हम एक केला बंदर को भी दे दें?" दादी ने कहा - "हाँ, ज़रूर दे दो." मीरा ने केला खिडकी पर रख दिया. बन्दर का बच्चा केला देखकर डरते-डरते आया और उसे उठाकर जल्दी से पेड़ पर बैठकर खाने लगा. दादी और मीरा यह देखकर हँसने लगीं.

तितली

लेखिका - अणिमा उपाध्याय

नन्हीं तितली डोल रही थी,
फूलों को वो तोल रही थी।
रंग बिरंगे फूलों से वो,
हंस के नाता जोड़ रही थी॥

थोड़ा सा मैं रस पी लूँगी,
पंख पराग से भर लूँगी।
दूजे फूलों पे जाकर मैं,
यह पराग कण उनको दूंगी॥

इठलाते पौधे भी उसको,
अपने पास बुलाते होंगे।
अपने बीजों को तितली से,
चहुं ओर बिखराते होंगे॥

कैसी अदभुत क्रीड़ा करते,
रंग प्रकृति में हैं भरते।
लाते हैं मुस्कान लबों पर,
छोटे से यह कीट पतंगे॥

Hickety Dickety Dock

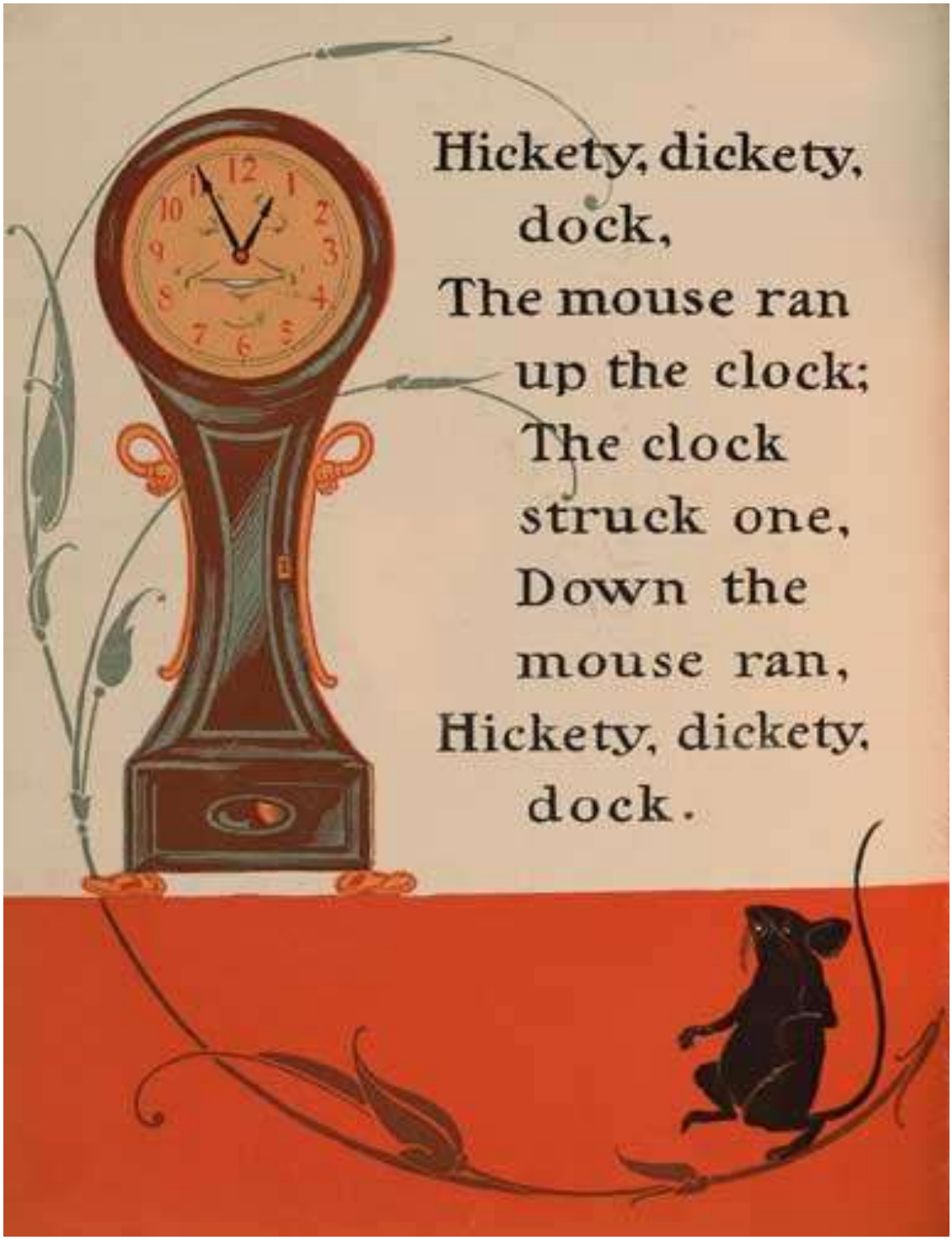

हँसगुल्ले

बच्चा - पापा-पापा, मुझे पेंसिल नहीं पेन दिलाओ ना |

पिता - लेकिन तुम्हें मेम पेंसिल से लिखने की बोलती है |

बच्चा - हां, पर बच्चों को मरते वक्त पेंसिल की नोंक हमेशा टूट जाती है |

छोटा बच्चा अपना रिजल्ट लेकर आया और पिता से बोला, पापा आप बहुत किस्मत वाले हैं |

पिता - कैसे बेटा ?

बच्चा - क्योंकि मैं फेल हो गया हूं | आपको मेरे लिए नयी किताबें नहीं खरीदनी पड़ेगी |

पिता ने बेटे से कहा - कभी बैठकर पढ़ भी लिया करो | दिन-भर या तो घूमते रहते हो या टीवी देखते रहते हो | जब मै तुम्हारी उम्र का था तो मेरे पिताजी ने मुझे सख्त अनुशासन में रखा था |

बेटे ने उत्तर दिया - आपके डैडी पुराने खयाल के रहे होंगे |

एक बच्चा रो रहा था | उसके पिता ने रोने का कारण पूछा | बच्चा बोला - दस रुपये दो, तब बताऊंगा|

पिता ने बेटे को दस रुपये दे दिए और कहा - अब बताओ बेटे ! तुम क्यों रो रहे थे ?

बच्चा बोला - मैं तो दस रुपये के लिए ही रो रहा था |

बूझो तो जानें

1. काली है पर काग नहीं,
   लम्बी है पर नाग नहीं।
   बल खाती है ढोर नहीं,
   बांधते है पर डोर नहीं।

2. बीमार नहीं रहती
   फिर भी खाती है गोली।
   बच्चे , बूढ़े डर जाते,
   सुन इसकी बोली।

3. मैं मरुँ मैं कटूं,
   तुम्हें क्यों आँसू आए।

4. ऊँट की बैठक, हिरण की चाल,
   बोलो वह कौन है पहलवान।

5. परत -परत पर जमा हुआ है,
   इसे ज्ञान ही जान।
   बस्ता खोलोगे तो इसको,
   जाओगे तुम पहचान।

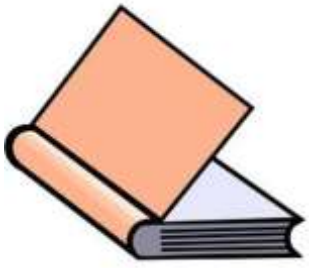

उत्तर - 1. चोटी 2. बंदूक 3. प्याज 4. मेंढ़क 5. किताब

डोरी के जरिये सुनना

शायद तुमने सुना होगा कि ध्वनि तरंगें ठोस चीजों के जरिये आसानी से चल सकती हैं। इसे खुद महसूस करने के लिये यह प्रयोग करके देखो।

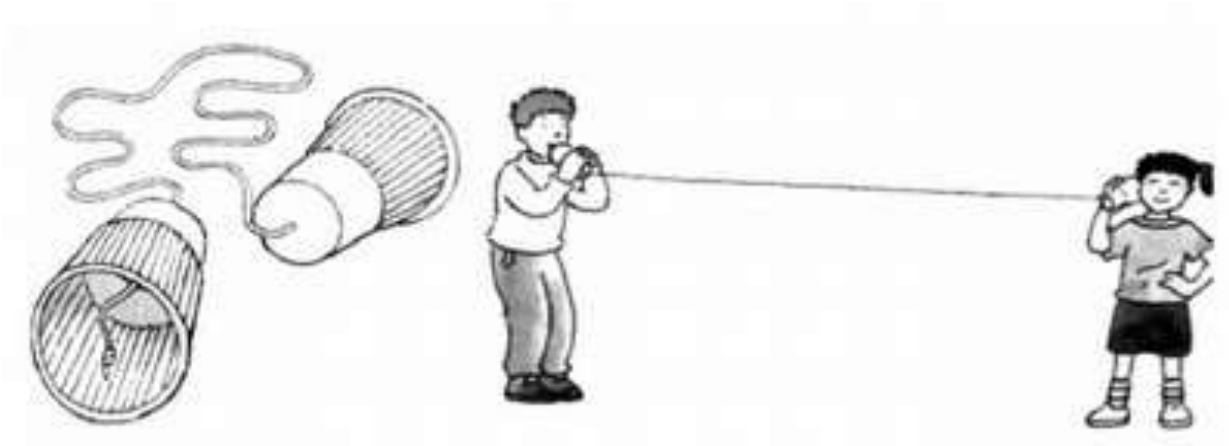

दो प्लास्टिक या कागज के कप (जैसे आइसक्रीम वाले) या माचिस की डब्बी के अंदर वाला हिस्सा लो। हर कप के चपटे बंद सिरे में एक छेद करो। इस छेद के जरिये एक डोरी पिरोकर उसमें एक गाँठ लगा दो। अब एक कप को तुम पकड़ो और दूसरे को एक दोस्त को पकड़ा दो। डोरी किसी और चीज को न छुए।अब तुम दोनों में से एक अपने कप को मुंह से लगाकर धीमे-धीमे बोले और उसे अपने कान से लगाकर सुने। क्या तुम्हें एक दूसरे की आवाज सुनाई देती है?

क्या हुआ? तुम्हें अपने दोस्त की आवाज इसलिये सुनाई देती है क्योंकि ध्वनि तरंगें डोरी के जरिये दूसरे तक पहुंच रही हैं। ध्वनि हवा के बजाय ठोस वस्तुओं के जरिए बेहतर आगे जाती है। अगर इसका सबूत चाहिए तो किसी मेज पर धीरे से अपनी उंगली से टकटका कर उसकी आवाज हवा के जरिये सुनो। अब उसी मेज पर अपना कान लगा कर टकटकाओ और देखो आवाज कैसी सुनाई देती है।

चित्र देखकर अपनी कहानी लिखो

किलोल के पिछले अंक में कहानी लिखने के लिये एक चित्र दिया गया था जिसपर कविता कोरी जी ने कहानी लिखी है। चित्र और कहानी हम प्रकाशित कर रहे हैं।

सबसे कीमती फल

लेखिका - कविता कोरी

सूरज गर्मियों की छुट्टी में अपने मामा के गांव आया. उसने देखा कि कई परिवार गांव छोड़कर जा रहे थे. उसके मामा ने बताया कि वे लोग पानी की कमी के कारण जा रहे हैं. सूरज को एक उपाय सूझा. उसने चौपाल के पास जाकर खोदना शुरू कर दिया। लोगों के पूछने पर उसने कहा कि उसे गांव के देवता ने सपने में कहा है कि यहां एक कुआं खोदो और जल मिलने पर पास में पेड़ लगाकर मेरी सेवा करो. मैं यहीं वास करूंगा और तुम्हे सबसे कीमती फल दूंगा.

लोगों ने कुआं खोदने में सूरज का साथ दिया. कुएं में मीठा पानी निकला. लोगों ने वहां पेड़ भी लगाए. कुछ दिन में गांव में हरियाली छा गई और सूखे की समस्या समाप्त हो गई. लोगों को समझ में आया कि जल ही सबसे कीमती फल है, और पेड़ ही देवता हैं.

अब इस चित्र को देखकर कहानी लिखो और हमे भेजो तो हम अगले अंक में आपकी कहानी भी प्रकाशित करेंगे।

पौधा जो जानवर खा जाए!!!

लेखिका - डॉ निधी विनायक

बहुत से जानवर पौधे खाते हैं, यह तो आप जानते ही हैं. लेकिन क्या आप किसी ऐसे पौधे के बारे में जानते हैं जो कीड़े खाता हो?

हाँ ! ऐसे पौधे भी होते हैं ! इनमें से एक पौधा है ' पिचर'. यह पौधा देखने में एक ढक्कन वाले पानी के जग या गिलास जैसा होता है. इस पौधे से एक गंध आती है जो कीड़ों को आकर्षित करती है. जैसे की कोई कीड़ा इस पौधे का रस पीने जाता है, वो इस में कैद हो जाता है.

पता है कैसे?

एक तो पौधे की फिसलन से कीड़ा अन्दर गिर जाता है और वापिस नहीं चढ़ पाता. दूसरा, ऊपर के पत्ते से इसका ढक्कन बंद हो जाता है ! बस फिर क्या, बेचारा कीड़ा मारा जाता है!

धीरे धीरे पौधा इस कीड़े को हज़म कर लेता है !

सोचो, कितना मज़ा आये अगर आप सच में इस पौधे को कीड़ा खाते हुए देख पाएं !!! लेकिन इसके लिए तो आपको मेघालय जाना होगा ! भारत में यह पौधा सिर्फ वहाँ के पहाड़ों में ही दिखता है.

क्या आप और किसी ऐसे पौधे के बारे में जानते हो ? पता तो करो !

कैसे बनाएं चेहरे

अगर सामने का पूरा चेहरा बनाना हो तो एक गोले या अंडाकार से चालू करो। आंखे ऊपर से आधी दूरी पर बनेंगी। कानों का ऊपरी सिरा आंखों के स्तर पर ही होगा। जो मुख्य चीजें भाव दिखाती हैं वह है- मुंह, भौंहे और सलवटें।

भाव दिखाने का सबसे सरल तरीका है - खुशी के लिए ऊपर की ओर एक चन्द्राकार मुंह और दुख के लिऐ नीचे की ओर। आगे हम भावों के बारे में और ज्यादा बताएंगे।

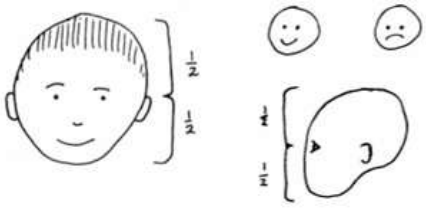

अगर किनारे से दिखाना हो, तो सिर गर्दन के ऊपर एक आम की तरह रखा होता है। आंख आधे रास्ते होती है, माथा हमेशा जितना सोचा जाता है उससे बड़ा होता है। इसी तरह कान और आंख के बीच की दूरी भी काफी होती है। मुंह और नाक के साथ जो मर्जी आए करो।

एक बच्चे की आंखें चेहरे पर ऊपर से दो तिहाई दूरी पर होती हैं। गाल बड़ों से मोटे और ठोड़ी छोटी होती है।

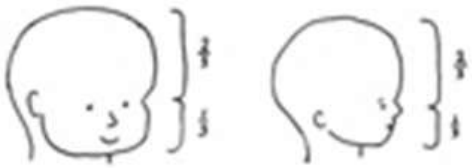

कुछ चित्रकारी करके देखें

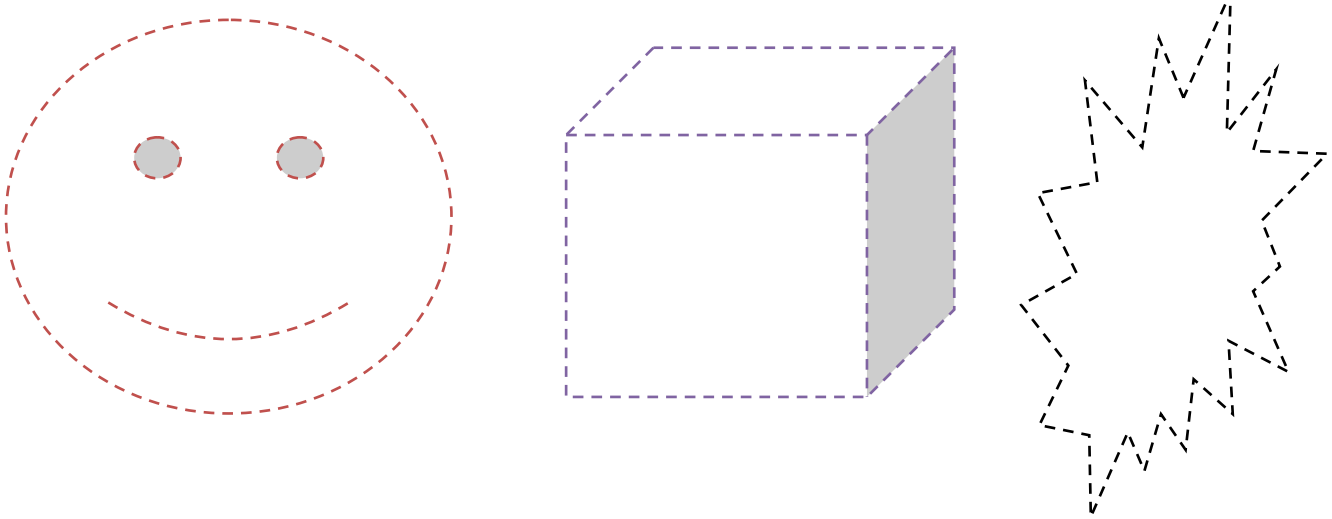

<u>**वर्ग पहेली**</u>

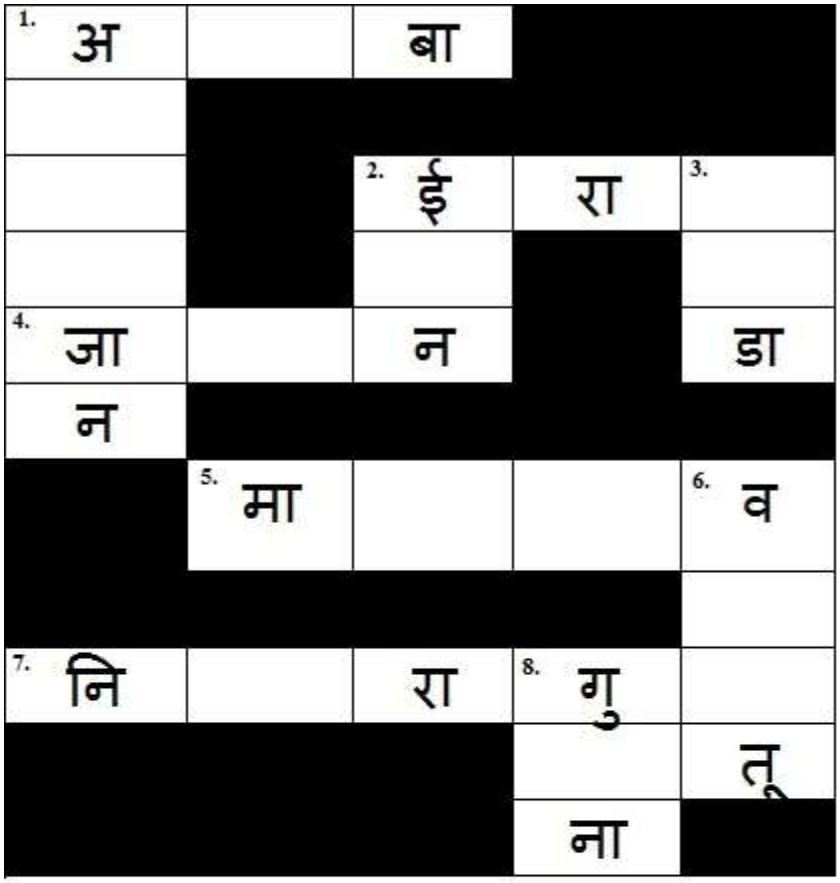

हल

ऊपर से नीचे - 1. अज़रबैजान 2. ईरान 3. कनाडा 6. वनुआतू 8. गुयाना

बांये से दांये - 1. अरूबा 2. ईराक 4. जापान 5. मालदीव 7. निकारागुआ

संपादक एवं प्रकाशक - डा. आलोक शुक्ला जे-7, श्रीराम नगर, रायपुर

फोन: 7000727568, ई-मेल: dr.alokshukla@gmail.com, website: http://www.alokshukla.com